वैदिक शिक्षा में महिलाओं की भूमिका

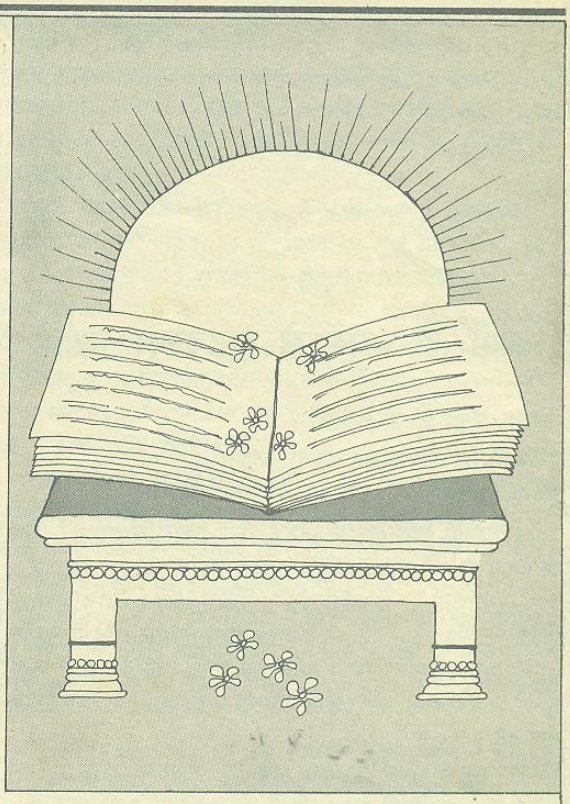

वैदिक काल में पुरुषों और महिलाओं के संबंध पूर्णतः समानता पर आधारित थे। पुरुषों की भाँति महिलाओं का शिक्षित होना सामान्य प्रक्रिया का अंग था। शिक्षा के स्तर पर पुरुषों एवं महिलाओं में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। लड़के-लड़कियाँ दोनों का 'उपनयन' संस्कार होता था।

उस समय शिक्षा का उद्देश्य सृजनात्मक क्षमता का विकास तथा मन को सुसंस्कारित करना होता था। ऋग्वेद में इस बात का उल्लेख मिलता है कि महिलाओं को व्यावहारिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। ब्राह्मण-कन्याओं को वेदों की शिक्षा और क्षत्रिय-वर्ण की कन्याओं को धनुष बाण एवं सैनिक शिक्षा देने का प्रचलन था। संगीत, नृत्य, चित्र, कला आदि ललित कलाओं की शिक्षा लड़कियों को विशेष रूप से दी जाती थी।

आध्यात्मिक विकास पर बल

ऋग्वेद निश्छल एवं सरल धर्म का प्रतिपादन करता है। सूक्तों का बहुत बड़ा समूह सादा और सरल है, जो ऐसी धार्मिक चेतना की अभिव्यक्ति करता है, जो परवर्ती समय के छल-कपट से शून्य था। उस काल में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं के आत्मिक विकास पर बल दिया जाता था। उन्हें ऐसी शिक्षा दी जाती थी कि वे समस्त विद्याओं से अपनी चेतना को जागृत कर सकें और जीवन में सर्वांगीण सफलता प्राप्त कर सकें। उन्हें वेदों की शिक्षा इसलिए दी जाती थी क्योंकि वेद हमेशा समस्त विद्याओं का मूल श्रोत रहा है। उसको जानने पर ही शिक्षा पूर्ण और सार्थक जानी जाती थी। ऋग्वेद के दशम मण्डल के दो लम्बे सूक्तों में नारी-शिक्षा का उदात्त उदाहरण मिलता है। जिन महिलाओं को साधना के क्षेत्र में मंत्रोंका दर्शन हो जाता था उन्हें 'ऋषिका' की संज्ञा प्राप्त होती थी। कक्षीवान् की पत्नी धोगा का नाम इस प्रसंग में उल्लेखनीय है जिसने अपनी तपस्या तथा मंत्र-दर्शन के बल पर अश्विनी के आशीर्वाद से अधिक वय व्यतीत् होनेपर भी अपने को विवाह योग्य बनाया। इसी प्रकार अन्य ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने साधना के क्षेत्र में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त किया। उनमें लोपमुद्रा, अपाला, रोमशा तथा सूर्या को 'ऋषिका' का स्थान प्राप्त है।

उपनिषद्कालीन शिक्षा

उपनिषदकाल में महिलाओं की शिक्षा अत्यंत सुव्यवस्थित रूप से मिलती है। इसकी जानकारी हमें 'पुराकल्पे तु नारीणां भौजी बंधन-मिष्यते' आदि प्रख्यात स्मृति वचनों से होती है। इस काल में महिला छात्राओं के दो वर्ग थे-ब्रह्मवादिनी और सद्योवधु अथवा सद्योद्वाहा. ब्रह्मवादिनी वैवाहिक जीवन से दूर रहती थीं। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वेदों का अध्ययन करती थी और साधनामय जीवन व्यतीत करती थीं। 'सद्योद्वाहा' वे महिलायें होती थीं जो ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती थीं। विवाह से पूर्व इनका 'उपनयन' संस्कार किया जाता था। इन्हें इन समस्त विद्याओं की शिक्षा दी जाती थी जिससे वे अच्छी गृहिणी बन सके। संगीत की शिक्षा इन्हें दी जाती थी। वैदिक यज्ञ में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था। ब्रह्मवादिनी महिलायें उपनिषद् काल की विशिष्टता मानी जाती थीं। ये महिला ब्रह्मचिंतन तथा ब्रह्मविषयक व्याख्यान में अपना समस्त जीवन व्यतीत करती थीं। इस काल की महिलायें गुरुकुलों में अध्यापक के पद पर आसीन होकर अध्यापन कार्य किया करती थीं। महर्षि पाणिनी ने उपाध्याय अध्यापक की सहधर्मणी तथा स्वयं अध्यापिका होनेवाली महिलाओं के लिए विभिन्न नामों की सृष्टि की है। उपाध्याय की स्त्री जो साधारणतया विदुषी नहीं होती थी, उपाध्यानी कहलाती थी परन्तु स्वयं अध्यापन करनेवाली महिलायें 'उपाध्याया' नाम से जानी जाती थीं। इस प्रकार शिक्षा की दृष्टि से उपनिषद्काल अत्यंत महत्त्वपूर्ण काल था।

आधुनिक युग की महिलायें

आज महिलाओं की शिक्षा उनके पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिये नहीं बल्कि उनकी शिक्षा समाज में 'स्टेटस् सिम्बल' का प्रतीक बन गया है। शिक्षित महिलायें रहन सहन, वेशभूषा, फैशन आदि के प्रति कुछ ज्यादा ही सजग हैं। शिक्षा का संबंध जीवन मूल्यों के विकास

(शेष पृष्ठ २५ पर)

(पृष्ठ १८ का शेष)
से नहीं जुडा है। स्वयं महिलायें ही प्राचीन मूल्यों एवं संस्कार को नकारने में ही अपना महत्त्व और गौरव मान बैठी हैं।

पाश्चात्य संस्कृति की तड़क-मड़क और बाह्य रूपरंग ही आधुनिकता की परिभाषा बनी है। तथाकथित आधुनिकता के नाम पर महिलायें वस्त्रों को अब शरीर आच्छादन के लिये न करके भोंडे और अश्लील प्रदर्शन करने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट महसूस नहीं करतीं। वह 'सेक्स' को समझना नही चाहती है बल्कि इस क्षेत्र में ऐसी छूट चाहती है जो उन्हें आदिम युग की ओर ले जाती है। विज्ञापनों और फिल्मों में जिस रूप से उनका आगमन हो रहा है, वह सभ्य महिला जगत के लिये एक प्रश्न चिन्ह है।

महिलाओं के लिये संगीत, कला, साहित्य आज आधुनिकता का पर्याय जरूर बन गया है लेकिन भौतिक प्रधान होने के कारण यह बहुत कुछ भोगविलास का साधन बनता जा रहा है। वैदिक काल में महिलाओं को संगीत, साहित्य और कला का सर्वोच्च ज्ञान कराया जाता था जो चेतना की परमसत्ता का बोध कराता था। आज महिलाओं के स्वभाव में जो परिवर्तन आया है उसे किसी क्रान्तिकारी परिवर्तन की संज्ञा नहीं दी जा सकती। आज भी वह तथाकथित आधुनिकता के आवरण मे भीरू, अंधविश्वासी, परावलम्बी हैं। कुछ महिलायें भले यह कह सकती हैं कि वे स्वयं नौकरी करती हैं, पुरुषों पर आश्रित नहीं, लेकिन आश्रय केवल पैसे का ही नहीं होता है। अन्तः मन से तो वह पुरुष का ही सहारा चाहती हैं। वैदिक काल मे महिलायें समरसता की प्रतिमूर्ति मानी जाती थीं। वह गृहस्थी की स्वामिनी ही नही थीं बल्कि अपने पति पर उसका पूर्ण प्रभुत्व था।

पत्ता – आर. पी. श्रीवास्तव
ऋ ६०९, सेक्टर,
नोयडा (गाजियाबाद)
उत्तर प्रदेश